

पाठ 14 अध्याय 12

यह उन सप्ताहों में से एक है जिसमें हम सावधानीपूर्वक और सोच-समझकर आगे बढ़ेंगे, क्योंकि व्यवस्थाविवरण 12 के पहले दो पदों से भी कुछ महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सिद्धांत निकाले जा सकते हैं। व्यवस्थाविवरण के अध्याय 1-11 मूलतः उस बात का परिचय हैं जिसका हम अध्ययन करने जा रहे हैं, अर्थात् अध्याय 12 और विद्वानों ने पवित्रशास्त्र के इस भाग के महत्व को इसे अपना नाम देकर स्थापित किया है: व्यवस्थाविवरण की संहिता।

मुझे लगता है कि अगर हम पिछले सप्ताह के अपने पाठ से एक सर्वोच्च विषय, एक सर्वोपरि ईश्वर-सिद्धांत के साथ बाहर आ सकते हैं, तो वह यह है कि जब प्रभु हमें अपनी वाचा में शामिल होने का अवसर प्रदान करते हैं तो हमारे पास एक विकल्प होता है; यह एक ऐसा प्रस्ताव है जिसे हम अस्वीकार कर सकते हैं। प्रभु ने इस्राएल से पूछा: “क्या तुम मेरे लोग बनना चाहते हो और मैं तुम्हारा परमेश्वर बनना चाहता हूँ? अगर तुम चाहते हो तो मेरी वाचा में शामिल हो जाओ जो मैंने तुम्हारे सामने रखी है। अगर तुम मेरी वाचा नहीं चाहते हो तो इसे अस्वीकार करो और चले जाओ”। यह वह विकल्प है जो हर उस व्यक्ति के सामने रखा जाता है जिसके पास यहोवा आता है।

और वैसे, अगर इस्राएल परमेश्वर की वाचा के प्रस्ताव को “नहीं” कहता तो उसके लिए कोई बड़ी सजा नहीं होती। इस्राएल को सिर्फ विशेष पवित्र दर्जा नहीं दिया जाता और इसके बजाय उसे उन राष्ट्रों के सार्वभौमिक समूह में फिर से शामिल कर दिया जाता, जहाँ से उसे निकाला गया था। स्वर्गीय और शाश्वत दृष्टिकोण से प्रभु के अनुग्रहपूर्ण प्रस्ताव को अस्वीकार करना एक गंभीर गलती होती; लेकिन सीमित सांसारिक दृष्टिकोण से वे किसी भी अन्य राष्ट्र या लोगों की तुलना में बेहतर या बदतर नहीं होते। आज के लोगों के लिए भी यही बात लागू होती है, जब हमें इस्राएल की वाचा और उस वाचा के मसीहा, यीशुआ, यीशु मसीह में शामिल होने का अवसर दिया जाता है। अपनी स्वतंत्र इच्छा से हम हाँ या ना कह सकते हैं, हाँ हमेशा के लिए हमारे अनंत भविष्य और कुछ मायनों में हमारे सांसारिक अनुभवों को बदल देगा। एक ना आम तौर पर हमें हमारे जीवनकाल के दौरान गरीबी या बीमारी या दुख के लिए अभिशप्त नहीं करेगी, बल्कि हमारी “ना” हमें प्रभु के साथ रिश्ते से और मुख्य रूप से आध्यात्मिक आशीर्वाद से बाहर कर देगी जो हमारे प्राकृतिक जीवन और हमारे आध्यात्मिक अनंत काल दोनों के दौरान इससे आते हैं।

लेकिन उस वाचा के प्रतिरूप का दूसरा भाग भी है और वह यह है कि प्रभु की वाचाओं को स्वीकार करने से उसके प्रावधान भी आते हैं; उन वाचाओं में नियम और शर्तें होती हैं। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के साथ वाचा संबंध में प्रवेश न करने का निर्णय लेता है, तो परमेश्वर द्वारा पेश की गई वाचा की शर्तों का उस व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि वह वाचा के लोगों का हिस्सा नहीं है।

हालाँकि अगर कोई परमेश्वर के साथ वाचा सम्बन्ध की पेशकश को स्वीकार करने का फैसला करता है, तो जो कोई भी ऐसा करता है, उस पर उस वाचा की सभी शर्तों का पालन करने का दायित्व है। और जैसा कि मूसा के युग में हुआ था, वैसा ही आज भी है और जब तक स्वर्ग और पृथ्वी समाप्त नहीं हो जाते।

इस सप्ताह कुछ समय निकालकर हम अगले कुछ हफ्तों में जो अध्ययन करने वाले हैं, उसके लिए मंच तैयार करना हमारे लिए सार्थक होगा क्योंकि कुछ विचार और अवधारणाएँ जो हमें बहुत सामान्य और साधारण और स्व-स्पष्ट लगती हैं (क्योंकि यही वह सब है जिसे हम कभी जानते हैं) वास्तव में अपनी प्रकृति में काफी क्रांतिकारी हैं, इसलिए उन विचारों और अवधारणाओं का प्रभाव खो जाता है। कुछ हफ्ते पहले मैंने हमारे अमेरिकी संविधान का इस्तेमाल कुछ सिद्धांतों और समस्याओं के उदाहरण के रूप में किया था, जिनका सामना मनुष्य हमारे सांसारिक समाजों पर शासन करने की कोशिश करते समय करते हैं, इसलिए मैं एक बार फिर संविधान का इस्तेमाल एक बात कहने के लिए करूँगा क्योंकि हम कम से कम इसकी संरचना और उद्देश्य से कुछ हद तक परिचित हैं।

हमारा संविधान स्वशासन और स्व-जिम्मेदारी के विचार (या बेहतर, एक आदर्श) पर आधारित था। जबकि लोकतंत्र का विचार कुछ हद तक क्रांतिकारी था, इसके विभिन्न तत्वों को पहले प्राचीन रोम द्वारा आजमाया गया था (सीनेट नामक एक सरकारी निकाय होने में जो सैद्धांतिक रूप से लोगों का प्रतिनिधित्व करता था)। हमारे संविधान के अन्य तत्वों को 13वीं शताब्दी के प्रसिद्ध मैग्ना कार्टा के आधार पर तैयार किया गया था, जिसने राजा की शक्ति को इस तरह सीमित कर दिया था कि उसे राज्य के स्थापित व्यवस्थाओं का पालन करना था, जैसा कि आम नागरिकों को करना था। इसलिए हमारा संविधान वास्तव में लोकतांत्रिक स्वशासन के आदर्श की ओर एक और (हालाँकि महत्वपूर्ण) कदम था, न कि उन सभी चीजों से पूरी तरह अलग जो कभी सोची या प्रयास की गई थी।

फिर भी, हमारे संविधान को इसकी स्थापना के वर्ष में कई लोगों द्वारा क्रांतिकारी माना गया था, लेकिन माउंट सिनाई की वाचा द्वारा इतिहास में अब तक ज्ञात सभी बातों से अभूतपूर्व विचलन का वर्णन करना मुश्किल है, खासकर सामाजिक न्याय से संबंधित। क्योंकि इस बिंदु तक पृथ्वी के किसी भी समाज के लिए व्यवस्था और न्याय का केवल एक ही स्रोत था: उसके राजा द्वारा घोषित व्यवस्था और न्याय। इस अवधारणा को पहली बार जंगल में इस्राएलियों के सामने पेश किया गया कि एक देवता (मानव राजा के बजाय) व्यवस्थाओं और अध्यादेशों और अनुष्ठानों की इस अद्भुत प्रणाली को जारी करेगा, जिसका पालन सरकार के अंतिम शासक को भी करना था, जिसने प्राचीन मन को चकित कर दिया। और जैसा कि आदर्श से कट्टरपंथी विचलन के ऐसे मामलों में होता है, यह अक्सर अधिकांश लोगों को वास्तविक भी नहीं लगता। यह एक कल्पना या कुछ ऐसा लगता है जो उनकी समझ से बहुत दूर है (जैसे कि एक सपना या एक दृष्टि) और इसलिए इसे व्यवहार में लाना मुश्किल है। इसका गलत अर्थ निकालना भी आसान है क्योंकि इन नई अवधारणाओं में से कई के बारे में बहुत कम था जिससे एक इस्राएली संबंधित हो सके; अक्सर यह आसान होता था कि मूसा के

व्यवस्था के कुछ तत्वों को उन तरीकों और रीति-रिवाजों के साथ मिला दिया जाए जिनका वे हमेशा से पालन करते आए थे; या शायद यह देखा जाए कि उनके आसपास की अन्य सस्कृतियाँ क्या करती थीं और चीजों को थोड़ा सशोधित किया जाए।

मूसा के समय तक (और यह आज भी दुनिया के अधिकांश धर्मों में यहूदी, ईसाई धर्म को छोड़कर काफी हद तक ऐसा ही है) लोग लगातार इस बात की खोज में रहते थे कि विभिन्न देवता उनसे क्या चाहते हैं। चूँकि उनका मानना था कि उनके साथ होने वाली अधिकांश चीजें एक या दूसरे देवता के निर्णयों का परिणाम थीं, इसलिए लोग यह जानने के लिए बेताब थे कि किस देवता ने उनके जीवन में हस्तक्षेप किया था, और उस देवता ने जो किया वह क्यों चुना, और क्या उस देवता को खुश करने या उससे छेड़छाड़ करने का कोई तरीका था। लेकिन लगभग सार्वभौमिक रूप से, यह सब व्यर्थ था क्योंकि यह समझा जाता था कि देवता और उनकी इच्छाएँ आम तौर पर अज्ञात थीं। संयोग का शासन था; देवताओं की सनक ने सभी और हर चीज को नियंत्रित किया, और इन देवताओं ने जो निर्णय लिया उसके लिए कोई तर्क नहीं था, सिवाय इसके कि एक सामान्य सांसारिक सम्राट की तरह उनके उद्देश्य स्वार्थी थे।

मैं आपको स्पष्ट रूप से बताता हूँ कि इस प्राचीन मानसिकता से हमारी पहचान करने का कोई तरीका नहीं है, जब तक कि हम शायद गैर-यहूदी ईसाई समाज में गहराई से शामिल न हों। लेकिन चूँकि हममें से ज्यादातर लोग उस तरह के माहौल में नहीं पले-बढ़े हैं, इसलिए मैं आपको संक्षेप में बता दूँ कि जीवन हमेशा असहज था क्योंकि आपके सिर पर यह ज्ञान मंडरा रहा था कि कोई न कोई परमेश्वर किसी भी पल आपके अस्तित्व को बाधित कर सकता है और आप कभी नहीं जान सकते कि आपने ऐसा क्यों किया या ऐसा क्या किया जिससे उस परमेश्वर का क्रोध आप पर आ गया। यह वास्तव में एक भयानक स्थिति थी।

हाल ही में मुझे एक प्राचीन कविता मिली जो अब्राहम के समय की है, जो लगभग 2000 ईसा पूर्व की है। इस कविता के अंश कई शताब्दियों की अवधि में कई अलग-अलग प्राचीन समाजों के अभिलेखों में शामिल किए गए हैं, यह इतना सम्मानित था कि इसने सभी सांस्कृतिक सीमाओं और युगों में मानव जाति की सामान्य दुर्दशा को मार्मिक रूप से व्यक्त किया। मुझे जितना समय लेना चाहिए था, उससे अधिक समय लेने जा रहा हूँ और इसका एक अच्छा हिस्सा आपको पढ़कर सुनाऊँगा क्योंकि यह पूरी तरह से उस दुविधा को दर्शाता है जिसमें पूरी ज्ञात दुनिया रहती थी (और इसका अधिकांश हिस्सा अभी भी रहता है) जो एक सच्चे ईश्वर को नहीं जानते थे। मेरी आशा है कि इस 4000 साल पुरानी पुस्तक को देखने से दो चीजें पूरी होंगी। सबसे पहले यह तोरह का अध्ययन करने वालों को प्राचीन दुनिया की मानसिकता और मानस को समझने में मदद करता है जिसमें मूसा और निर्गमन के इब्रानी रहते थे; एक ऐसी मानसिकता जिसने उनकी सोच को ऐसे झूठे विश्वासों से संक्रमित कर दिया और इसलिए मिस्र से आए इन इब्रानी शरणार्थियों के लिए यह समझना और आत्मसात करना कितना मुश्किल था कि यहोवा इस्राएल को क्या दे रहा था और दूसरा, आप देख सकते हैं कि हम कितने धन्य और भाग्यशाली हैं कि परमेश्वर के पास वह चरित्र और गुण हैं जो उसके पास हैं, और उसने कृ

पापूर्वक खुद को और अपने नियमों और आदेशों को हमें बताया है। परमेश्वर के पास ऐसे चरित्र और गुण हैं जिन्हें हम बहुत ही तथ्यात्मक रूप से स्वीकार करते हैं और उन्हें हल्के में लेते हैं, लेकिन ये गुण लोगों के लिए अकल्पनीय और यहाँ तक कि भ्रमित करने वाले थे जब तोरह को रिकॉर्ड किया जा रहा था क्योंकि यह उनके और बाकी दुनिया के अभ्यास से बहुत अलग था।

इस 4000 वर्ष पुरानी गुमनाम कविता का नाम है, "प्रत्येक ईश्वर से प्रार्थना"।

हर परमेश्वर से प्रार्थना

मेरे स्वामी के हृदय का क्रोध मुझ पर शान्त हो जाए।

जो देवता अज्ञात है, वह मेरे प्रति शान्त रहे;

जो देवी अज्ञात है, वह मुझ पर शांत हो जाये।

वह ईश्वर जिसे मैं जानता हूँ या नहीं जानता हूँ, वह मेरे प्रति शांत रहे,

वह देवी जिसे मैं जानता हूँ या नहीं जानता हूँ, वह मुझ पर शांत हो जाए।

मेरे परमेश्वर का हृदय मेरी ओर शान्त रहे।

मेरी देवी का हृदय मेरे प्रति शांत रहे।

मेरे देवी-देवता मुझ पर शांत रहें।

परमेश्वर (जो मुझ से क्रोधित हो गया है) 40 मुझ पर शांत हो जाए,

देवी (जो मुझसे क्रोधित हो गयी हैं।) मुझ पर शांत हो जाएँ।

(10) (पंक्तियाँ 11-18 निश्चित रूप से बहाल नहीं की जा सकतीं)

अज्ञानता में मैंने अपने ईश्वर की निषिद्ध वस्तु खा ली है,

अज्ञानवश मैंने उस स्थान पर पैर रखा है, जिसे मेरी देवी ने वर्जित किया है। (20)

हे यहोवा, मेरे अपराध बहुत हैं;

मेरे पाप बड़े हैं।

हे मेरे परमेश्वर, मेरे अपराध बहुत हैं,

मेरे पाप बड़े हैं।

हे मेरी देवी, मेरे अपराध बहुत हैं:

मेरे पाप बड़े हैं।

हे ईश्वर, मैं जिसे जानता हूँ या नहीं जानता, (मेरे) अपराध बहुत हैं।

मेरे पाप बड़े हैं,

हे देवी। मैं चाहे जानू या न जानू, मेरे अपराध बहुत हैं,

मेरे पाप बड़े हैं।

जो अपराध मैं ने किया है, उसे मैं नहीं जानता,

मैंने जो पाप किया है, मैं उसे नहीं जानता।

जो निषिद्ध काम मैंने किया है, जिस निषिद्ध स्थान पर मैंने पैर रखा है, मैं उसे नहीं जानता।

प्रभु ने क्रोध में भरकर मेरी ओर देखा; (30)

परमेश्वर ने अपने हृदय के क्रोध में मुझसे सामना किया;

जब देवी मुझ पर क्रोधित हुई तो उन्होंने मुझे बीमार कर दिया।

जिस ईश्वर को मैं जानता हूँ या नहीं जानता हूँ उसने मुझ पर अत्याचार किया है,

जिस देवी को मैं जानता हूँ या नहीं जानता हूँ उसने मुझ पर दुख डाला है।

यद्यपि मैं लगातार मदद की तलाश में रहता हूँ, लेकिन कोई भी मेरा हाथ नहीं पकड़ता;

जब मैं रोता हूँ तो वे (देवी—देवता) मेरे पास नहीं आते।

मैं विलाप करता हूँ, परन्तु कोई मेरी नहीं सुनता,

मैं परेशान हूँ;

मैं अभिभूत हूँ;

मैं नहीं देख सकता।

हे मेरे ईश्वर, दयालु, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ,

“सदा मेरी ओर झुको”;

मैं अपनी देवी के चरण चूमता हूँ,

मैं तुम्हारे आगे रेंगता हूँ। (40)

(पंक्तियों 41—49 अधिकांशतः टूटी हुई हैं और उन्हें निश्चित रूप से पुनः स्थापित नहीं किया जा सकता)

हे मेरी देवी, मैं उसे जानता हूँ या नहीं जानता, कब तक?

इससे पहले कि तुम्हारा शत्रुतापूर्ण हृदय शांत हो जाए? (50)

मनुष्य गूंगा है, वह कुछ भी नहीं जानता,

मानवजाति, प्रत्येक व्यक्ति जो अस्तित्व में है वह क्या जानता है?

वह पाप कर रहा है या पुण्य, उसे यह भी पता नहीं है।

हे मेरे प्रभु, अपने दास को निराश न करें;

वह दलदल के पानी में डूबा हुआ है, उसका हाथ पकड़ो।

मैंने जो पाप किया है, उसे भलाई में बदल दो;

जो अपराध मैंने किया है उसे वायु उड़ा ले जाए;

मेरे अनेक कुकर्म वस्त्र की तरह उतर गए।

हे मेरे परमेश्वर, मेरे अपराध सात गुने सात हैं;

मेरे अपराधों को दूर कर; हे मेरी देवी, मेरे अपराध सात गुने सात हैं, मेरे अपराधों को दूर कर दे, (60)
(मेरे) अपराध सात गुने सात हैं; मेरे अपराधों को दूर कर, हे देवी, जिसे मैं जानता हूँ या नहीं जानता, (मेरे)
अपराध सात गुने सात हैं;

हे ईश्वर, जिसे मैं जानता हूँ या नहीं जानता,

मेरे अपराधों को दूर कर।

मेरे अपराधों को दूर कर (और) मैं तेरा गुणगान करूँगा।

तुम्हारा हृदय भी एक सच्ची माँ के हृदय के समान मेरे प्रति शांत रहे,

एक सच्ची माँ (और) एक सच्चे पिता की तरह यह मेरे प्रति शांत रहे।

यह दिल तोड़ने वाला और निराशाजनक दोनों है, है न? यह मानव जाति की पूरी तरह से निराशाजनक स्थिति और दुनिया की धार्मिक प्रणालियों की दयनीय स्थिति को व्यक्त करता है जो अतीत और वर्तमान में इसके बारे में कुछ भी सकारात्मक करने में सक्षम नहीं हैं। लेकिन यह वह स्थिति थी जिसमें इब्रानी और साथ ही ग्रह पृथ्वी ग्रह पर हर कोई पैदा हुआ था। यह व्यक्त करता है कि कैसे सभी मानवता, आध्यात्मिकता को सामान्य रूप से देखती है और कैसे उनका जीवन इन देवताओं के लिए बेकार मोहरे के रूप में था। अब यहाँ यह परमेश्वर, यह यहोवा आता है, और वह मूसा और इस्राएल के माध्यम से दुनिया पर सभी वक्र गेंदों की माँ को फेंकता है। वह उन्हें बताता है कि वह वास्तव में कौन है, वह वास्तव में क्या अच्छा और बुरा मानता है

और वह हर उस पुरुष और महिला से क्या अपेक्षा करता है जो उससे प्यार करता है, और यहाँ तक कि वह अपने स्वयं के अपरिवर्तनीय न्याय प्रणाली की सीमाओं के भीतर काम करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता है जिसे उसने इस्राएल के साथ स्थापित किया है। वह कहते हैं कि कोई दूसरा ईश्वर नहीं है जिस पर विचार भी किया जा सके और इसलिए जो अस्तित्व में नहीं है उसके आगे नतमस्तक न हों या उससे न डरें, और वह उम्मीद करते हैं कि उनके प्रति आज्ञाकारिता, प्रेम और कृतज्ञता से की जाए न कि भय और व्यामोह से। क्यों? क्योंकि उन्होंने सबसे पहले मानवजाति से प्रेम किया क्योंकि उन्होंने हमें बनाया था। वह उनके जीवन के सबसे छोटे-छोटे पहलुओं की परवाह करता है और उनमें से प्रत्येक के साथ एक व्यक्तिगत संबंध बनाना चाहता है। प्रभु यहाँ तक कहते हैं कि ये सिद्धांत जो उन्होंने इस्राएल को दिए हैं, वे पूरे ब्रह्मांड की नींव हैं, वे हमेशा से रहे हैं, हमेशा रहेंगे, और वे इस बात पर भरोसा कर सकते हैं कि वे अनंत काल से लेकर अनंत काल तक एक जैसे ही रहेंगे।

उस प्राचीन कविता में व्यक्त, समस्त मानवजाति की निराशा से अधिक दूर कुछ भी नहीं हो सकता, जो प्रभु परमेश्वर ने इस्राएल को प्रदान किया।

एक समाज या यहाँ तक कि एक अकेला व्यक्ति भी इस कविता में व्यक्त की गई हताश सोच (और सार्वभौमिक रूप से समझा जाता है कि चीजें जिस तरह से हैं) से रातों-रात व्यवस्था और ईश्वर के प्रेम को समझने में कैसे बदल जाता है? उत्तर: आप नहीं समझते और आप नहीं कर सकते। इसलिए इस्राएल वास्तव में इसे नहीं समझ पाया; यह उन सभी बातों के विपरीत था जो वे जानते थे। वे शब्दों को सुन सकते थे लेकिन यह समझ में नहीं आया। इसलिए उन्होंने गलतियाँ कीं, पीछे हटे, पश्चाताप किया, फिर से पीछे हटे, उन तरीकों को अपनाया जो उन्हें सही लगे, धर्मत्याग किया, सुधार किए, और फिर से इस निरंतर चक्र में गिर गए जो एक पल में ईश्वर की ओर मुड़ गया और अगले ही पल उससे दूर चला गया।

मूसा ने 4 दशकों में इस्राएल को उसके सबसे अच्छे और सबसे बुरे समय में देखा। यह इस अभिषिक्त नेता के लिए बहुत ही कठिन और निराशाजनक रहा होगा, लेकिन मरने से पहले उन्होंने मोआब के पहाड़ों पर इस उपदेश में कई दिन, या शायद सप्ताह बिताए होंगे, इस बारे में विस्तार से बताते हुए कि सभी चीजों के निर्माता, सभी राजाओं के राजा और सभी प्रभुओं के प्रभु ने इस घटिया समूह के लोगों के साथ एक आश्चर्यजनक (या बिल्कुल अविश्वसनीय) वाचा बाँधी थी, जिन्होंने इसके लायक कुछ भी नहीं किया था। यही हम व्यवस्थाविवरण में पढ़ रहे हैं, और यह इब्रानी सोच और विश्वासों की स्थिति है जिस पर काबू पाने की कोशिश की जा रही है।

हम आधुनिक विश्वासियों को इब्रानियों के प्रति सबसे अधिक सहानुभूति और समझ रखने की आवश्यकता है (न कि उस अवमानना की जो अधिक सामान्य है) जो उनकी निरंतर असफलताओं और दुष्टता की ओर लौटने के बारे में है जिसके बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं। हमें यह भी समझाने की आवश्यकता है कि इस्राएल के लोगों ने (और आज के रूढ़िवादी यहूदी भी नहीं) ईश्वर के इन नियमों को बोझ के रूप में क्यों नहीं देखा,

जैसा कि अधिकांश ईसाई मानते हैं, इससे बहुत दूर। व्यवस्था उनकी सबसे बड़ी खुशी थी और बनी हुई है (आखिरकार! क्योंकि यहाँ एक ईश्वर है जिसने खुद को प्रकट किया, अपने चरित्र, अपनी माँगों और इरादों, और अपने नियमों और विनियमों को स्पष्ट किया। अब किसी अज्ञात ईश्वर के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है जो आपके जीवन में हस्तक्षेप करने के लिए अचानक प्रकट हो सकता है। अब इस बारे में निराशा की ज़रूरत नहीं है कि देवताओं की दुनिया आपके साथ क्या कर सकती है, सिर्फ अपने आनंद के लिए। क्या आप असली ईश्वर के साथ संबंध चाहते हैं? ठीक है, मूसा कहते हैं, यहाँ ईश्वर कौन है और आप इसे इस तरह से करते हैं और यह कल, या परसों, या हमेशा के लिए नहीं बदलेगा। और आज हम, इस्राएल द्वारा सहे गए उन सभी कष्टों के लाभार्थी हैं, जो उन्होंने प्रभु के अद्भुत, प्रतीत होने वाले अलौकिक तरीकों को आत्मसात करने के प्रयास में सहे। क्या यह कोई आश्चर्य की बात है कि संत पौलुस ने गैर-यहूदियों से कहा कि वे परमेश्वर के साथ अपने नए रिश्ते के कारण घमंड न करें? एक ऐसा रिश्ता जो हमारे यहूदी मसीहा के परिणामस्वरूप आता है, जिसका आगमन इब्रानी इतिहास के संदर्भ में हुआ था? और क्या यह कोई आश्चर्य की बात है कि संत पौलुस ने हमें यह भी बताया कि विश्वासियों के रूप में यह हमारा कर्तव्य और हमारा ऋण है कि हम यहूदी लोगों को पत्थर और माँस दोनों में वचन देने के लिए मूर्त तरीकों से चुकाएँ, जैसा कि उन्हें प्रेषित किया गया था?

आइए हम अपने दैनिक जीवन में यह सब ध्यान में रखें और साथ मिलकर व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 पढ़ें।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 पूरा पढ़ें

एक बड़ा बदलाव होने वाला है; इस्राएल अब एक संगठित (हालाँकि बड़ा) समूह नहीं रह गया है जो जंगल के तम्बू के रूप में जाने जाने वाले एक केंद्रीकृत अभयारण्य के चारों ओर सावधानीपूर्वक व्यवस्थित होकर रहता है। एक ऐसा अभयारण्य जो उनके स्थानांतरित होने के साथ ही उनके साथ चला जाता है। इसके बजाय जब वे यर्डन नदी को पार करते हैं और वादा किए गए देश पर कब्ज़ा करते हैं तो वे कई हजार वर्ग मील के कनान (निर्धारित और अलग-अलग जिलों में) में गोत्र और कुल के अनुसार फैल जाएंगे। उनके दैनिक जीवन की स्थितियों में इस तरह के बड़े बदलाव के साथ, इस्राएल के नागरिकों के लिए तार्किक और व्यावहारिक प्रश्न का उत्तर दिया जाना चाहिए तो हम पूजा और बलिदान कहाँ करें? आखिरकार, अगर यह आवश्यकता बनी रही कि पूजा और बलिदान के लिए केवल एक ही स्थान की अनुमति है तो परिभाषा के अनुसार वह स्थान इस्राएल के कुछ गोत्रों के लिए पास होगा और अधिकांश अन्य के लिए दूर और लंबी यात्रा होगी।

केंद्रीय और एकल अभयारण्य का विषय उन व्यवस्थाओं और मिसालों के पीछे प्रेरक शक्ति है जिन्हें अगले कुछ अध्यायों में निर्धारित किया जाएगा, और कनान के चारों ओर फैले असंख्य झूठे देवताओं और उनके बलिदान के स्थानों के बारे में चिंता का कुछ हद तक उन निर्णयों से लेना-देना है जिनके परिणामस्वरूप कुछ हद तक नियम और व्यवस्था बदले गए।

मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि एक और बड़ा बदलाव प्रक्रिया में है, इस्राएल अब बेडौइन प्रकार का समाज नहीं रह जाएगा जो रेगिस्तान में एक मरुस्थल से दूसरे मरुस्थल में घूमता रहता है, बल्कि यह एक स्थायी कृषि समाज बनने वाला है जैसा कि माउंट सिनाई पर मूसा के माध्यम से दिए गए व्यवस्थाओं में अनुमान लगाया गया था। आखिरकार, 7 बाइबल पर्व मुख्य रूप से (कम से कम सांसारिक भौतिक दृष्टिकोण से) कृषि पर्व हैं, जो निश्चित रूप से भटकते चरवाहों के समाज के भीतर केंद्रीय (या पालन करना भी संभव नहीं) हैं।

हमें इस प्रक्रिया पर ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि इतिहास की वास्तविकता यह है कि समाज समय के साथ बदलता और विकसित होता है, और इसलिए हमें ईश्वर की न्याय प्रणाली के पीछे छिपे गहरे सिद्धांतों को समझने की आवश्यकता है, ताकि हम प्रत्येक नई पीढ़ी के सामने आने वाली परिस्थितियों में उन स्थायी सिद्धांतों के प्रति सच्चे रह सकें।

अध्याय 12 की पहली पद यह स्पष्ट करती है कि आने वाले निर्णय उनके द्वारा कनान पर कब्जा करने पर लागू होते हैं। और वह नियम नंबर एक यह है कि कनान के देवताओं के सभी मंदिर, वेदियों, मंदिर और पूजा स्थल नष्ट कर दिए जाने चाहिए। हालाँकि यह केवल दो पदों में ही हमारे सामने आता है, लेकिन उन स्थानों की सामान्य विशेषताओं का एक अच्छा वर्णन है जहाँ कनान के लोग पूजा करते थे। पद 2 में ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों और पेड़ों के नीचे की बात की गई है। फिर पद 3 में उन पूजा स्थलों की पहचान करने वाली वस्तुओं के बारे में बताया गया है: वेदियों, खड़े पत्थर, पवित्र खंभे और नक्काशीदार मूर्तियाँ (उनके देवताओं की)।

हमने पहले भी प्राचीन मूर्तिपूजक पूजा पद्धतियों के बारे में बात की है, लेकिन चूँकि इसे फिर से हमारे सामने लाया गया है, तो मैं इसका सारांश और समीक्षा करने के लिए बस एक क्षण का समय लूँगा।

जहाँ भी संभव हो बलिदान की वेदी सबसे ऊँचे स्थानीय स्थान पर स्थित होती थी (भले ही वह एक टीला ही क्यों न हो) क्योंकि यह माना जाता था कि देवता सामान्यतः पर्वत शिखरों पर निवास करना पसंद करते हैं। वास्तव में ईश्वर के लिए सबसे शुरुआती बाइबल उपाधियों में से एक (एल शदाई) के अर्थ का रहस्य हाल ही में सुलझाया गया है। अक्कादियन और उगरिट भाषाओं को समझने में कुछ सफलताओं के कारण, कई प्राचीन इब्रानी शब्द अब स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं क्योंकि यह लंबे समय से ज्ञात है कि अक्कादियन और उगरिट वे भाषाएँ थीं जिनसे इब्रानी भाषा का जन्म हुआ था। शदाई का अर्थ है, "पहाड़", इसलिए एल शदाई का अर्थ है पहाड़ का परमेश्वर। स्वाभाविक रूप से यह बाइबल के शुरुआती समय में दुनिया के सभी निवासियों की मानसिकता के साथ फिट बैठता है, और यह उस घटना के साथ भी फिट बैठता है जब परमेश्वर ने खुद को एल शदाई के रूप में याकूब से परिचित कराया, जब याकूब मेसोपोटामिया के रास्ते में कुछ पहाड़ों से गुजर रहा था।

अब एक "उच्च स्थान" केवल उस स्थान को इंगित करता है जो उसके आस-पास के क्षेत्र से "उच्च" (ऊँचाई में) है (इसके अलावा निश्चित रूप से एक देवता की पूजा का स्थान भी)। यदि कोई गोत्र समतल रेगिस्तानी मैदान पर रहती है, तो उनके लिए एक उच्च स्थान केवल मिट्टी और पत्थरों का ढेर हो सकता है जो रेगिस्तान के तल से 3 या 4 फीट से अधिक ऊँचा नहीं हो। यदि कोई कम लुढ़कती पहाड़ियों वाले क्षेत्र में था, तो "उच्च स्थान" आस-पास की पहाड़ियों में सबसे ऊँचा था जो उचित रूप से सुलभ था। यदि कोई अधिक पहाड़ी क्षेत्र में था, तो आम तौर पर उच्च स्थान को आस-पास की चोटियों में से सबसे ऊँची जगह पर बनाया जाना था।

हम पाते हैं कि इब्रानियों ने भी ठीक इसी तरह की प्रथा अपनाई। उदाहरण के लिए, यरूशलेम के इलाके में, माउंट मोरिया आम तौर पर शहर का सबसे ऊँचा स्थान है (तकनीकी रूप से जैतून का पहाड़ यरूशलेम के बाहर है), और इसलिए परमेश्वर का मंदिर वहाँ बनाया गया था।

लेकिन हम पद 2 में पेड़ों के नीचे वेदियों के निर्माण के बारे में भी उल्लेख देखते हैं। मुर्तिपूजक धर्मों में सदाबहार पेड़ों के एक उपवन में बलिदान की वेदी बनाना आम बात थी, या वे वेदी के चारों ओर पेड़ों का उपवन भी लगाते थे। इसका कारण बहुत सरल था: सदाबहार पेड़ उर्वरता का प्रतिनिधित्व करते थे और उर्वरता के लिए बलिदान सभी मुर्तिपूजक बलिदानों में सबसे आम थे। एक शब्द जो हमें कभी-कभी बाइबल में देखने को मिलता है वह है अशेरा, और अशेरा का शाब्दिक अर्थ है "उपवन", जैसे जैतून के उपवन में। कभी-कभी अशेरा का अनुवाद खंभे के रूप में किया जाता है लेकिन यह संदिग्ध है सिवाय इसके कि जहाँ पेड़ लगाना संभव या व्यावहारिक नहीं था, वहाँ खंभों (लकड़ी के पेड़ के तने, निश्चित रूप से मृत) का उपवन हो सकता था जो पेड़ों का प्रतिनिधित्व करते थे। एक अन्य शब्द जो हमारे सामने आएगा वह है अष्टरोध, जो प्रजनन देवी का औपचारिक नाम है (जैसा कि आप आसानी से देख सकते हैं कि अशेरा और अष्टरोध दोनों शब्द संबंधित हैं)।

इन अशेरा (वृक्षों के झुंमुट) के इर्द-गिर्द, बलिदान की वेदियों के अलावा, वे कभी-कभी नक्काशीदार खंभे भी रखते थे। बस एक टोटम पोल की कल्पना करें, हम जिन टोटम पोल से परिचित हैं, वे प्राचीन मध्य पूर्व में आमतौर पर खुदे जाने वाले टोटम पोल से थोड़े अधिक विस्तृत हैं, लेकिन उनका उद्देश्य मूल रूप से एक ही था: उन्होंने उस विशेष स्थान (और वहाँ बनी वेदियों) को उस नक्काशीदार खंभे में दर्शाए गए विशिष्ट देवी-देवताओं को बलिदान देने के स्थान के रूप में चिह्नित किया। जिन खड़े पत्थरों की बात की जाती है, उन्हें कभी-कभी स्तंभ भी कहा जाता है, लेकिन हमारे आधुनिक सोचने के तरीके में स्तंभ शब्द हमें गलत धारणा देता है। हम रोमन इमारत के इन अद्भुत रूप से ऊँचे, बेलनाकार, सुसज्जित पत्थर के स्तंभों के बारे में सोचते हैं, लेकिन यह ऐसा नहीं था।

खड़ा पत्थर वस्तुतः एक बड़ा सपाट पत्थर था, जो सीधा खड़ा था, और कभी-कभी उस पर शब्द, छेनी से लिखे होते थे, लेकिन अक्सर पत्थर पर कोई निशान नहीं होता था। पत्थर का इस्तेमाल आम तौर पर

उसकी प्राकृतिक अवस्था में किया जाता था, पत्थर काटने वाले ने उसे आकार नहीं दिया। अक्सर यह एक स्मारक होता था जो बस इतना कहता था कि इस स्थान पर कुछ महत्वपूर्ण हुआ था। अन्य मुर्तिपूजक धर्मों ने उस पत्थर में अपने परमेश्वर का प्रतीक देखा और यह पूजा की वस्तु थी।

अब इस सब की कुँजी यह समझना है कि कोई भी व्यक्ति बिना ईश्वरीय अनुमति के कहीं भी अपने ईश्वर के लिए वेदी या मंदिर बना सकता है। कनान की भूमि पूरी तरह से विभिन्न देवताओं को समर्पित वेदियों, खंभों और पवित्र उपवनों से भरी हुई थी। एकल परिवार अपनी निजी वेदियाँ बनाते थे, शहर, सामुदायिक वेदियाँ बनाते थे, राजा अपनी और अधिक विस्तृत वेदियाँ बनाते थे और स्वाभाविक रूप से ये वेदियाँ पूजा करने वाले की सुविधा के लिए पास में बनाई जाती थीं। इस्राएलियों को इस सब के बारे में पूरी जानकारी थी क्योंकि उस समय पूरी ज्ञात दुनिया में यह एक मानक प्रथा थी। और जिस कारण से परमेश्वर, मूसा के माध्यम से, वेदियों और मंदिरों के बारे में इन सभी विवरणों से गुजर रहा है, वह यह है कि इब्रानियों ने स्वाभाविक रूप से (बिना किसी दूसरे विचार के) यह मान लिया होगा कि वे भी बाकी सभी की तरह ही काम करेंगे; उन्होंने अपनी कई बस्तियों के सबसे नज़दीक कई स्थानों पर यहोवा के लिए वेदियाँ और उपवन बनाए होंगे।

इसलिए पद 4 में इस्राएल को निर्देश दिया गया है कि वे यहोवा की आराधना इस तरीके से न करें (झाड़ियाँ, पेड़, कुलदेवता के खंभे, आदि)। बल्कि प्रभु कहते हैं, एक निश्चित स्थान होगा जहाँ प्रभु की आराधना की जानी है (अर्थात् वह स्थान जहाँ तम्बू बनाया जाना है और बलिदान किया जाना है) और कहीं और नहीं। और केवल इस एक केंद्रीय स्थान पर ही इस्राएल के 12 गोत्र यात्रा करेंगे और अपने प्रसाद, दशमांश और बलि के जानवर लाएँगे।

इस निर्देश में जिन चीजों के विरुद्ध व्यवस्था बनाया जा रहा था, उनमें से एक उस युग के लिए मानक संचालन प्रक्रिया भी थी: एक देवता की पूजा और बलिदान के स्थान को दूसरे देवता की पूजा और बलिदान के स्थान के साथ सह स्थानित करना। वेदी ऐसी जगह नहीं थी जहाँ कोई किसी भी देवता को बलि और भेंट चढ़ा सकता था। हर मूर्तिपूजक वेदी और हर उच्च स्थान विशेष रूप से किसी निश्चित नामित देवता या देवी को समर्पित था। लेकिन वेदी बनाना कठिन काम था और समय लेने वाला था, इसलिए जैसे-जैसे लोग क्षेत्रों में आते-जाते रहे, और विजेता आए और गए और अपने साथ अपने देवताओं का समूह लेकर आए, और जैसे-जैसे स्थानीय देवता की लोकप्रियता बढ़ती और घटती, आमतौर पर एक मौजूदा वेदी या उच्च स्थान को बस एक देवता से दूसरे देवता को समर्पित कर दिया जाता था। यहोवा कहता है कि इस्राएल को उसके लिए ऐसा नहीं करना है।

मैं कुछ बिंदुओं पर विचार करना चाहूँगा और फिर इन सब को परमेश्वर की मानवजाति के लिए योजना से जोड़ते हुए समापन करूँगा: जैसे जंगल में सभी इस्राएलियों के लिए बलिदान करने के लिए केवल एक ही स्थान था, वैसे ही कनान में भी होना चाहिए। लेकिन इसका कारण नहीं बताया गया है। यह इतना सरल हो सकता है कि परमेश्वर चाहता है कि सभी मुर्तिपूजक धर्मों के विपरीत चीजें संचालित हों। हम निश्चित रूप से

जानते हैं कि केंद्रीय पवित्र स्थान (जंगल का तम्बू) कई मौकों पर इस्राएल में अलग-अलग स्थानों पर स्थानांतरित किया गया था और पवित्र तम्बू के पवित्र स्थान के इन स्थानांतरणों पर परमेश्वर द्वारा कोई प्रत्यक्ष आपत्ति नहीं थी।

एक और बिंदु इस आदेश से संबंधित है कि कनानी देवताओं के सभी ऊँचे स्थानों को गिरा दिया जाए और नष्ट कर दिया जाए। यह आदेश (हालाँकि पूरी तरह से वास्तविक है और इसका पालन किया जाना है) स्वर्गीय "आदर्श" होने की उसी श्रेणी में आता है, जिस तरह प्रभु ने अपनी पवित्र भूमि को घेरने के लिए जो क्षेत्रीय सीमाएँ निर्धारित की हैं, वे स्वर्गीय आदर्श हैं। इस्राएल, आज तक, उस सभी "आदर्श" क्षेत्र पर पूरी तरह से अधिकार नहीं कर पाया है।

आदर्श क्या है? यह पूर्णता की अभिव्यक्ति है। यह उस परम अवस्था की धारणा है जिसे कोई चीज़ प्राप्त कर सकती है। मानवीय रूप से कहें तो आदर्श शायद ही कभी प्राप्त होते हैं। परमेश्वर के सभी आदर्श प्राप्त किए जाएँगे।

वास्तव में इस्राएल ने कभी भी कनान पर इतना नियंत्रण करने की क्षमता हासिल नहीं की कि वह हर मूर्तिपूजक मंदिर, वेदी और अशेरा को नष्ट कर सके। यहाँ तक कि दाऊद और उसके बेटे सुलैमान (जिसे इस्राएल की राष्ट्रीय शक्ति का शिखर माना जाता है) के शक्तिशाली शासनकाल के दौरान भी यह कभी पूरा नहीं हुआ। फिर भी हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इनमें से कोई भी आदर्श इसलिए विफल नहीं हुआ क्योंकि प्रभु असमर्थ थे और न ही इसलिए कि लक्ष्य गंभीरता से प्राप्त करने योग्य नहीं था, बल्कि इसलिए क्योंकि यहोवा ने इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में इस्राएल की सफलता को उनके प्रति आज्ञाकारिता पर निर्भर बनाया (हम इसके बारे में पढ़ रहे हैं, है न?)। और जैसा कि हम पुराने नियम के आने वाले अध्यायों और पुस्तकों में देखेंगे, इस्राएल उस संबंध में बहुत लड़खड़ा गया और इसलिए परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए आदर्शों की पूर्ति को स्थगित कर दिया गया है और तब तक प्राप्त नहीं किया जाएगा जब तक कि मसीहा फिर से नहीं आता और पूरी पृथ्वी पर शासन नहीं करता।

मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अगर ईश्वर की योजना को पूरा करने के लिए हमें मसीहा की ज़रूरत है, तो इसका एक बड़ा कारण यह है कि ईश्वर के आदर्शों को साकार करने की पूर्णता तब तक नहीं लाई जा सकती जब तक कि दुष्ट लोग दुनिया पर राज करते रहें। यह सिर्फ एक और अच्छी ईसाई कहावत की तरह लग सकता है लेकिन सच्चाई यह है कि अगर मनुष्य, वास्तविक रूप से, ईश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन कर सकता, तो मसीहा की ज़रूरत नहीं होती। लेकिन आदर्श मनुष्य के रूप में बनाए गए आदम के पतन के साथ, मसीहा इन स्वर्गीय आदर्शों की पूर्ति का एकमात्र मार्ग बन गया क्योंकि मनुष्य अब बुराई को जानता था और हमें यह पसंद आया।

लेकिन समझिए, परमेश्वर की आज्ञाएँ विफल नहीं हुईं परमेश्वर का वचन कम नहीं हुआ, बल्कि परमेश्वर के प्राणी विफल हुए और मैं जिन प्राणियों की बात कर रहा हूँ वे सभी मनुष्य हैं (सिर्फ इस्राएली नहीं); एकमात्र

प्राणी जिसके पास स्वतंत्र इच्छा है जो प्रभु की स्वतंत्र इच्छा के करीब है। इसके अलावा, मूसा की वाचा दोषपूर्ण नहीं थी, मनुष्य दोषपूर्ण थे। इसलिए 2000 साल पहले मसीहा के आगमन के साथ, उस वाचा को नवीनीकृत किया गया (जैसा कि यिर्मयाह 31 में कहा गया है), लेकिन वाचा को संचालित करने वाला व्यक्ति मूसा से यीशु में स्थानांतरित हो गया। मूसा एक दोषपूर्ण व्यक्ति था और इसलिए एक दोषपूर्ण मध्यस्थ था: यीशुआ एक दोषरहित व्यक्ति (आदर्श व्यक्ति) था और इसलिए एक दोषरहित मध्यस्थ था। जब तक आदर्श मनुष्य (मसीहा यीशु) जो परमेश्वर भी है, वापस नहीं आता, और जब तक वह संसार से परमेश्वर का विरोध करने वाले प्रत्येक मनुष्य को नहीं हटा देता, और जब तक मानवजाति को प्रलोभन देने और दोष देने वाले दुष्ट को बन्द नहीं कर दिया जाता, और जब तक हमारा राजा महिमा और पूर्णता में तथा पाप के प्रति सहनशीलता के बिना शासन नहीं करता, तब तक परमेश्वर के आदर्श पृथ्वी पर कभी भी पूरी तरह से पूरे नहीं होंगे।

फिर भी, जब प्रभु ने इस्राएल के लिए तोरह को रखा और उनसे कहा कि यह उनके लिए बहुत कठिन नहीं है, न ही यह हमारे लिए, उनके विश्वासियों के लिए बहुत कठिन है (कम से कम आदर्श अर्थ में)। हमें प्रभु के इन सभी आदेशों और नियमों को शारीरिक रूप से पूरा करने की क्षमता के साथ बनाया गया था। लेकिन हमारे मानव पिता, आदम के पाप में गिरने के साथ, इसने हमारे भाग्य को विफल प्राणियों की एक जाति के रूप में सील कर दिया जो ईश्वर के आदर्शों को पूरा नहीं कर सके। लेकिन मसीहा यीशुआ कर सकते हैं और करेंगे।

हम अगले सप्ताह व्यवस्थाविवरण 12 पर चर्चा जारी रखेंगे।